हकदार

जो थे अपने
अलविदा कह गए,
अश्कों के सैलाब में
अरमान ढह गए,
चाह कर भी उनको
न रोक पाए हम,
अब तो जिंदगी के
मायने बदल गए,
रुसवाईयाँ देख उनकी
समंदर छलक गया,
निगाह पड़ते ही इनकी
सैलाब आ गया,
क्यूँ जाने की जिद में
गुनाह कर गए,
अपना बनाने वाले
क्यूँ गैर बन गए,
कोंन अपना कोंन पराया
ये समझ नही आया,
फिर भी हंमने दिल को
ढाढस ही बँधाया,
हकीकत इस दुनिया की
बदल ही गई है,
साँस भी निकल तो
गम भी नही है,
आना और जाना तो
खेल बन गया,
जिंदगी की गाड़ी को
ब्रेक लग गया,
जिसने समझा दुनिया को
इंसान बन गया।,
खुदा के रहमोकरम का
हकदार हो गया,

✍ गोपाल कृष्ण व्यास